



जल समाचार

उत्तराखंड राज्य के देहरादून शहर में 28 नवम्बर से 01 दिसम्बर 2023 तक 6 वें विश्व आपदा प्रबंधन सम्मलेन का आयोजन

उत्तराखंड राज्य के देहरादून शहर में 28 नवम्बर से 01 दिसम्बर 2023 तक 6वें विश्व आपदा प्रबंधन सम्मलेन का तथा 8-9 दिसम्बर को राज्य में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा आयोजित एक प्रेस वार्ता में इसकी जानकारी दी गयी। उन्होंने बताया कि 6वां विश्व आपदा प्रबंधन सम्मलेन, उत्तराखंड, आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, DMICS हैदराबाद तथा उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, के संयुक्त तत्वाधान में 28 नवम्बर से 01 दिसम्बर 2023 तक उत्तराखंड राज्य के देहरादून शहर में आयोजित किया जा रहा है जिसका उद्घाटन माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया जाना संभावित है। कार्यक्रम में भारत सरकार के गृह एवं आपदा प्रबंधन मंत्री माननीय श्री अमित शाह जी मुख्य अतिथि होंगे।

पद्म विभूषित श्री अमिताभ बच्चन जी इस सम्मलेन के ब्रांड अम्बेसडर होंगे। इस सम्मलेन में भारत के अन्तरिक्ष अनुसंधान, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, भारत के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार के साथ-साथ विश्व के विभिन्न देशों के जलवायु एवं आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों, विभिन्न राज्यों, केंद्र प्रशासित संस्थानों के विशेषज्ञों, राज्यों की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषदों, एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं, नीति निर्धारकों, वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, के प्रतिभाग करने की संभावना है।

इस सम्मलेन के उद्देश्यों में हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र और समुदायों पर ध्यान देते हुए जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रतिरोध की चुनौतियों का सामना करना, उत्तराखंड को आपदा प्रतिरोधकता और तत्परता के लिए जलवायु अनुकूलन समाधान केंद्र के रूप में विकसित करना, पूर्व चेतावनी प्रणाली तथा पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण जैसे विषय सम्मिलित हैं। सम्मलेन के परिणामों से उत्तराखंड राज्य में आपदा प्रबंधन और हिमालयी क्षेत्रों की आपदा से जुड़ी चुनौतियों के समाधान के लिए

विश्व स्तर पर किये जा रहे प्रयासों को गति मिलेगी। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि इस सम्मलेन के बाद 8-9 दिसम्बर को राज्य में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 का भी आयोजन किया जा रहा है जिससे उत्तराखंड में सुरक्षित निवेश को देश-विदेश में प्रोत्साहन मिलेगा। सम्मलेन में उत्कृष्ट शोधपत्र और युवा शोधार्थियों और प्रतिभागियों को अलग-अलग वर्गों में पुरस्कृत किया जाएगा।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा 16 मार्च, 2023 से 31 मार्च, 2023 तक स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन

जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की द्वारा दिनांक 16 मार्च, 2023 से 31 मार्च, 2023 तक स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसी श्रृंखला में **कौशिक पब्लिक स्कूल, इमलीखेड़ा, (रुड़की ब्लॉक)** में स्कूली बच्चों के लिए स्वच्छता एवं जल संरक्षण विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान की ओर से स्वच्छ भारत मिशन के नोडल

अधिकारी डॉ. एल. एन. ठकुराल, वैज्ञानिक ई द्वारा इस दिशा में भारत सरकार द्वारा किये गए प्रयासों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर संस्थान की ओर से उपस्थित संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों यथा डॉ. मनीष कुमार नेमा, श्री नीतीश पाटीदार, श्री नीरज कुमार भटनागर, श्रीमति बीना प्रसाद, एवं श्री पवन कुमार द्वारा जल संरक्षण एवं जल गुणवत्ता के विभिन्न विषयों पर बच्चों को जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुब्रत कुंडू, प्रधानाचार्य, कौशिक पब्लिक स्कूल, इमलीखेड़ा ने राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें विजयी बच्चों को मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गए। इस कार्यक्रम में संस्थान की ओर से श्री अर्पित, श्री ओमप्रकाश, श्री राम कुमार, श्री नरेश कुमार, श्री योगेश कुमार तथा कौशिक पब्लिक स्कूल इमलीखेड़ा के



कौशिक पब्लिक स्कूल इमलीखेड़ा में स्कूली बच्चों के लिए स्वच्छता एवं जल संरक्षण विषय पर कार्यक्रम का आयोजन।

प्रधानाचार्य, सभी अध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में स्कूल के प्रांगण में पौधारोपण भी किया गया।

कौशिक पब्लिक स्कूल इमलीखेड़ा (रुड़की ब्लॉक) में ही दिनांक 19 अक्टूबर, 2023 को स्कूली बच्चों के लिए “स्वच्छता एवं कचरा मुक्त भारत” विषय पर एक अन्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री मुकेश कौशिक वरिष्ठ समाजसेवी एवं अध्यक्ष, कौशिक पब्लिक स्कूल इमलीखेड़ा मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम में संस्थान की ओर से स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. एल.एन. ठकुराल वैज्ञानिक ‘ई’ द्वारा भारत सरकार द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों पर विस्तार से चर्चा की गई तथा बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. अनिल कुमार लोहनी ने कचरा मुक्त भारत के सम्बन्ध में किये जा रहे कार्यों की जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि ने अपने अभिभाषण में भारत सरकार तथा राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की द्वारा स्वच्छता एवं कचरा मुक्त समाज के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना की तथा उनको सफल बनाने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए ड्राइंग एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इन प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के रूप में संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. अश्विनी

रानडे, श्री ओमप्रकाश, डॉ. ऋचा पाण्डेय, श्रीमती चारु पाण्डेय तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुब्रत कुंडू, समन्वयक एवं सुश्री पूजा प्रधान ने सहयोग दिया। प्रतियोगिता में विजयी बच्चों को मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गए। इस कार्यक्रम में संस्थान की ओर से श्री राम कुमार, श्री नरेश कुमार, श्री नरेश जोलान, एवं श्री इफ्तखार अहमद आदि ने सहयोग प्रदान किया।

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के नानौता विकास खंड में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय, कचराई, में स्कूली बच्चों के लिए स्वच्छता विषय पर ड्राइंग एवं

पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. एल.एन. ठकुराल वैज्ञानिक ‘ई’ ने भारत सरकार द्वारा इस दिशा में किये गए प्रयासों पर विस्तार से चर्चा की तथा बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। संस्थान की ओर से उपस्थित वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. सुहास खोब्रागडे, श्री ओमकार सिंह तथा डॉ. मनोहर अरोड़ा ने जल के महत्व, जल संरक्षण, जल गुणवत्ता के अतिरिक्त स्वच्छता संबंधी विभिन्न विषयों पर बच्चों को जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिकों श्री ओमकार सिंह, श्री जे पी पात्रा, एवं श्री ओमप्रकाश द्वारा

निर्णायक मंडल के रूप में विशिष्ट भूमिका निभाई गयी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अंशुल कुमार, विकास खंड शिक्षा अधिकारी, नानौता, ने प्रतियोगिता में विजयी बच्चों को पुरस्कार वितरित किये तथा अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने स्वच्छता की आवश्यकता पर बल देते हुए राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में संस्थान की ओर से श्री पवन कुमार द्वारा मंच संचालन किया गया तथा इस कार्यक्रम में उच्च प्राथमिक विद्यालय, कचराई, के अध्यापकों, कर्मचारियों ने सहयोग दिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए स्कूल के कुछ अध्यापकों को स्मृति चिन्ह भी भेंट



उच्च प्राथमिक विद्यालय, कचराई में स्कूली बच्चों के लिए स्वच्छता विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन।

किये गए। कार्यक्रम के अंत में इस अवसर पर स्कूल के प्रगण में पौधारोपण भी किया गया।

जल संरक्षण एवं जल सुरक्षा पर विस्तृत जानकारी

जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की द्वारा दिनांक 9 फरवरी 2023 को राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दौलतपुर में “जल संरक्षण एवं जल सुरक्षा” विषय पर जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक श्री ओमकार सिंह, डॉ. ए.आर. सेंथिल कुमार, एवं श्री दिगंबर सिंह ने जल संरक्षण, जल सुरक्षा एवं जल गुणवत्ता के साथ-साथ तालाबों के रख-रखाव एवं जल मौसमविज्ञान प्रबंधन से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर बच्चों को जानकारी प्रदान की। संस्थान के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों श्री राजेश अग्रवाल, श्री नागेश्वर राव अलक्का, श्री पवन कुमार, श्री दौलत राम आदि ने इस कार्यक्रम में विशिष्ट सहयोग दिया तथा बच्चों को जल से सम्बंधित पैम्पलेट/पोस्टर वितरित किये। इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें विजयी बच्चों को मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गए। इस कार्यक्रम में स्कूल के प्रधानाचार्य, अध्यापकगण, प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं अध्यापकगण, ग्राम प्रधान, क्षेत्र प्रधान तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम में बच्चों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गयी।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा दिनांक 17-18 अगस्त, 2023 को 7वीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा दिनांक 17-18 अगस्त, 2023 को संस्थान में “जलवायु परिवर्तन एवं जल प्रबन्धन” विषय पर राजभाषा हिन्दी में दो दिवसीय 7वीं राष्ट्रीय जल

संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह आयोजन जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार तथा राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसरण में तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 1999 से हर चौथे वर्ष नियमित रूप से किया जा रहा है। इस संगोष्ठी की सम्पूर्ण कार्यवाही राजभाषा हिंदी में आयोजित की जाती है।

इस संगोष्ठी के आयोजन से जुड़े



17 अगस्त, 2023 को राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की में द्विदिवसीय 7वीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह।

विभिन्न कार्यों के निष्पादन के लिए विभिन्न-विभिन्न समितियां यथा आयोजन समिति, तकनीकी सलाहकार समिति, सर्वकार्यभारी समिति आदि गठित की गईं। देश के विभिन्न भागों में “जलवायु परिवर्तन एवं जल प्रबन्धन” से जुड़े प्रबुद्ध वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, ने इस संगोष्ठी के लिए अपने महत्वपूर्ण शोध कार्यों पर प्रपत्र संप्रेषित किये, जिनमें से 77 प्रपत्रों को प्रस्तुतीकरण हेतु चुना गया। इन 77 प्रपत्रों के सारांशों को एक पुस्तक के रूप में संकलित कर प्रकाशित किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन CSIR_CBRI के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार द्वारा किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्य अतिथि द्वारा जलवायु परिवर्तन एवं जल प्रबन्धन के समुचित नियोजन

एवं प्रबंधन की आवश्यकता पर बल दिया गया।

संगोष्ठी में आठ तकनीकी सत्रों: (i) सतही जल निर्धारण एवं प्रबंधन (ii) भूजल निर्धारण एवं प्रबंधन (iii) जलवायु परिवर्तन एवं जल चक्र पर उसका प्रभाव (iv) पर्यावरण एवं जल गुणवत्ता (v) जल संसाधनों के विकास/ प्रबंधन की नवीनतम तकनीकें (vi) पर्वतीय क्षेत्रों में जल प्रबंधन (vii) कृषि क्षेत्रों में जल प्रबंधन तथा (viii) जल संसाधन प्रबंधन में जन भागीदारी, में कुल 69 प्रपत्र प्रस्तुत किए गए। प्रत्येक सत्र में प्रस्तुत सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को पुरस्कृत किया गया। विभिन्न शोध

संक्षेप में संगोष्ठी से प्राप्त संस्तुतियां निम्न हैं:-

- जल लेखा (WA+) ओपन एक्सेस आंकड़ा आधारित एक उन्नत फ्रेमवर्क है जिसे किसी बेसिन में जलविज्ञानीय घटकों के आंकलन के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। यह हमें भूमि तथा जल उत्पादकता के स्थानिक आंकलन में भी मदद करता है। इसका उपयोग भारत में सभी बेसिनों पर किया जाना चाहिए ताकि जल का इष्टतम उपयोग किया जा सके।
- जलवायु परिवर्तन एवं नवीनतम जलविज्ञानीय आंकड़ों के आधार पर विभिन्न जल संरचनाओं व पुलों के अभिकल्प बढ़ के पुनः निर्धारण की नितान्त आवश्यकता है।
- गिरते भूजल स्तर व घटती भूजल गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए भूजल प्रबंधन की नीतियों को संशोधित करना होगा।
- भूजल गुणवत्ता का स्थानिक एवं कालिक स्तर पर व्यापक निर्धारण करने की आवश्यकता है ताकि भूजल को प्रदूषित करने वाले स्रोतों की पहचान कर उचित कार्यवाही की जा सके।



डॉ. एस.के. मिश्रा, प्रोफेसर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की द्वारा राष्ट्रीय जल संगोष्ठी के अवसर पर विशिष्ट व्याख्यान।

पत्रों के निष्कर्षों के आधार पर संगोष्ठी की संस्तुतियां तैयार की गयीं और इन संस्तुतियों से समापन समारोह में सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया गया।

- मौजूदा जल एवं मौसम विज्ञानीय आंकड़ा तंत्र को आधुनिक एवं सघन करने की आवश्यकता है ताकि जलवायु परिवर्तन आंकलन



राष्ट्रीय जल संगोष्ठी के समापन समारोह में मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए संस्थान के निदेशक।

- के लिए एक उन्नत व दीर्घकालिक आंकड़ा तंत्र तैयार हो सके।
- जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि की मांगों व अन्य मांगों में फेरबदल का आंकलन किया जाना चाहिए ताकि उपलब्ध जल संसाधनों का इष्टतम उपयोग किया जा सके।
- जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून चक्र में होने वाले बदलावों का भी विस्तृत अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- उदीयमान प्रदूषकों के निदान व औद्योगिक अपशिष्ट जल उपचार व पुनः प्रयोग पर उन्नत तकनीकों जैसे एरोबिक-एनारोबिक प्रणाली, प्राकृतिक उपचार विधि आदि, पर शोध की आवश्यकता है।
- जल में रासायनिक अभिलक्षणों पर अवसाद के प्रभाव पर भी शोध की आवश्यकता है।
- जलविज्ञान एवं जल प्रबंधन के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान एवं नई तकनीकों (जैसे: निर्णय सहायक तंत्र) को प्रशिक्षित कार्मिकों के माध्यम से फील्ड में अनुप्रयोग व इनके प्रचार प्रसार की आवश्यकता है।
- जल सुरक्षा हासिल करने के लिए जल प्रबंधन में आई.ओ.टी. आधारित विशिष्ट जल प्रबंधन प्रणालियां विकसित करने की आवश्यकता है।
- प्राकृतिक जल स्रोतों की सूचिका (इंवंटरी) की आवश्यकता है।
- जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जल स्रोतों के पुनर्जीविकरण के प्रयासों पर बल देने की आवश्यकता है।
- हिमनदों पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों पर निरन्तर अनुसंधान की आवश्यकता है।

- कृषि में इष्टतम जल प्रबंधन हेतु सिंचाई की आधुनिकतम तकनीकों जैसे टपक/फुव्वारा/ए. आई. आधारित सिंचाई के उपयोग की अत्यधिक आवश्यकता है।
- जल संसाधन प्रबंधन में शोध कार्यों से प्राप्त अनुशांसाओं को जन जागरूकता कार्यक्रमों एवं जन भागीदारी के माध्यम से आम जनमानस तक पहुंचाने की आवश्यकता है।
- सामाजिक, आर्थिक एवं सतत विकास हेतु महिलाओं एवं अन्य जनमानस की सहभागिता सभी जल आधारित परियोजनाओं में सुनिश्चित की जानी चाहिए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान देहरादून के निदेशक डॉ. आर.के. सिंह थे। इसके साथ-साथ हिन्दी में तकनीकी पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना के तहत वर्ष 2021 के लिए तीन लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया।

संपर्क करें:

पवन कुमार

सह-संपादक, जल चेतना
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की।

जल है तो कल है

पानी की बर्बादी ना करें
इस्तेमाल के बाद नल तुरन्त बंद कर दें

“जल बचाएं, जीवन बचाएं”